13

पेड़ की बात

क्या आपने कभी कोई बीज बोया है? बीज से पेड़ बनने की कहानी बहुत रोचक है। कैसे अंकुर फूटता है, पौधा बनता है, धीरे-धीरे बढ़ता है और बड़ा पेड़ बन जाता है। आइए जानते हैं पेड़ की बात......

बहुत दिनों तक मिट्टी के नीचे बीज पड़े रहे। इसी तरह महीना-दर-महीना बीतता गया। सर्दियों के बाद वसंत आया। उसके बाद वर्षा की शुरूआत में दो-एक दिन पानी बरसा। अब और छिपे रहने की आवश्यकता नहीं थी! मानों बाहर से कोई शिशु को पुकार रहा हो, 'और सोए मत रहो, ऊपर उठ जाओ, सूरज की रोशनी देखो।' आहिस्ता-आहिस्ता बीज का ढक्कन दरक गया, दो सुकोमल पत्तियों के बीच अंकुर बाहर निकला। अंकुर का एक अंश नीचे माटी में मज़बूती से गड़ गया और दूसरा अंश माटी भेदकर ऊपर की ओर उठा। क्या तुमने अंकुर को उठते देखा है? जैसे कोई शिशु अपना नन्हा-सा सिर उठाकर आश्चर्य से नई दुनिया को देख रहा है!

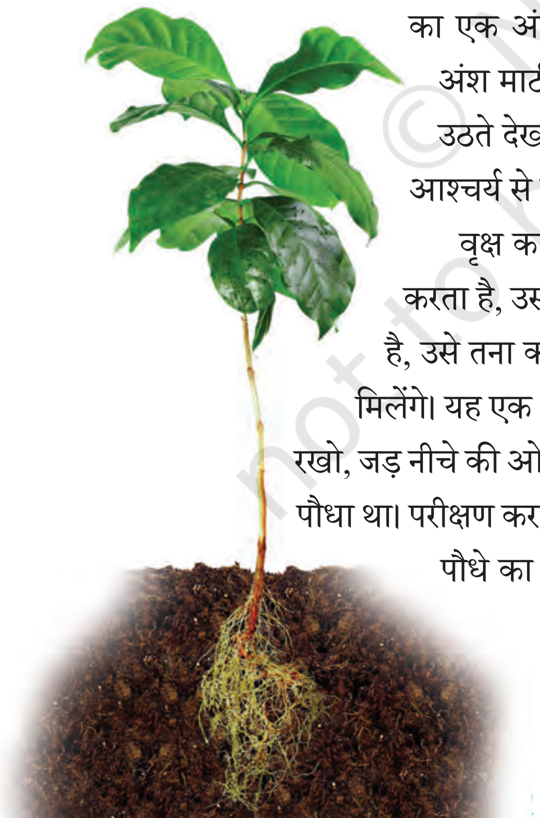

वृक्ष का अंकुर निकलने पर जो अंश माटी के भीतर प्रवेश करता है, उसका नाम जड़ है और जो अंश ऊपर की ओर बढ़ता है, उसे तना कहते हैं। सभी पेड़-पौधों में 'जड़ व तना' ये दो भाग मिलेंगे। यह एक आश्चर्य की बात है कि पेड़-पौधों को जिस तरह ही रखो, जड़ नीचे की ओर जाएगी व तना ऊपर की ओर उठेगा। एक गमले में पौधा था। परीक्षण करने के लिए कुछ दिन गमले को औंधा लटकाए रखा। पौधे का सिर नीचे की तरफ़ लटका रहा और जड़ ऊपर की

© NCERT not to be republished

ओर रही। दो-एक दिन बाद क्या देखता हूँ कि जैसे पौधे को भी सब भेद मालूम हो गया हो। उसकी सब पत्तियाँ और डालियाँ टेढ़ी होकर ऊपर की तरफ़ उठ आईं तथा जड़ घूमकर नीचे की ओर लटक गई। तुमने कई बार सर्दियों में मूली काटकर बोई होगी। देखा होगा, पहले पत्ते व फूल नीचे की ओर रहे। कुछ दिन बाद देखोगे कि पत्ते और फूल ऊपर की ओर उठ आए हैं।

हम जिस तरह भोजन करते हैं, पेड़-पौधे भी उसी तरह भोजन करते हैं। हमारे दाँत हैं, कठोर चीज़ खा सकते हैं। नन्हें बच्चों के दाँत नहीं होते वे केवल दूध पी सकते हैं। पेड़-पौधों के भी दाँत नहीं होते, इसलिए वे केवल तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं। पेड़-पौधे जड़ के द्वारा माटी से रस-पान करते हैं। चीनी में पानी डालने पर चीनी गल जाती है। माटी में पानी डालने पर उसके भीतर बहुत-से द्रव्य गल जाते हैं। पेड़-पौधे वे ही तमाम द्रव्य सोखते हैं। जड़ों को पानी न मिलने पर पेड़ का भोजन बंद हो जाता है, पेड़ मर जाता है।

सूक्ष्मदर्शी से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। पेड़ की डाल अथवा जड़ का इस यंत्र द्वारा परीक्षण करके देखा जा सकता है कि पेड़ में हज़ारों-हज़ार नल हैं। इन्हीं सब नलों के द्वारा माटी से पेड़ के शरीर में रस का संचार होता है।

इसके अलावा वृक्ष के पत्ते हवा से आहार ग्रहण करते हैं। पत्तों में अनगिनत छोटे-छोटे मुँह होते हैं। सूक्ष्मदर्शी के जरिए अनगिनत मुँह पर अनगिनत होंठ देखे जा सकते हैं। जब आहार करने की ज़रूरत न हो तब दोनों होंठ बंद हो जाते हैं। जब हम श्वास-प्रश्वास ग्रहण करते हैं तब प्रश्वास के साथ एक प्रकार की विषाक्त वायु बाहर निकलती है, उसे 'अंगारक' वायु कहते हैं। अगर यह ज़हरीली हवा पृथ्वी पर इकट्ठी होती रहे तो तमाम जीव-जंतु कुछ ही दिनों में उसका सेवन करके नष्ट हो सकते हैं। ज़रा विधाता की करुणा का चमत्कार तो देखो, जो जीव-जंतुओं के लिए जहर है, पेड़-पौधे उसी का सेवन करके उसे पूर्णतया शुद्ध कर देते हैं। पेड़ के पत्तों पर

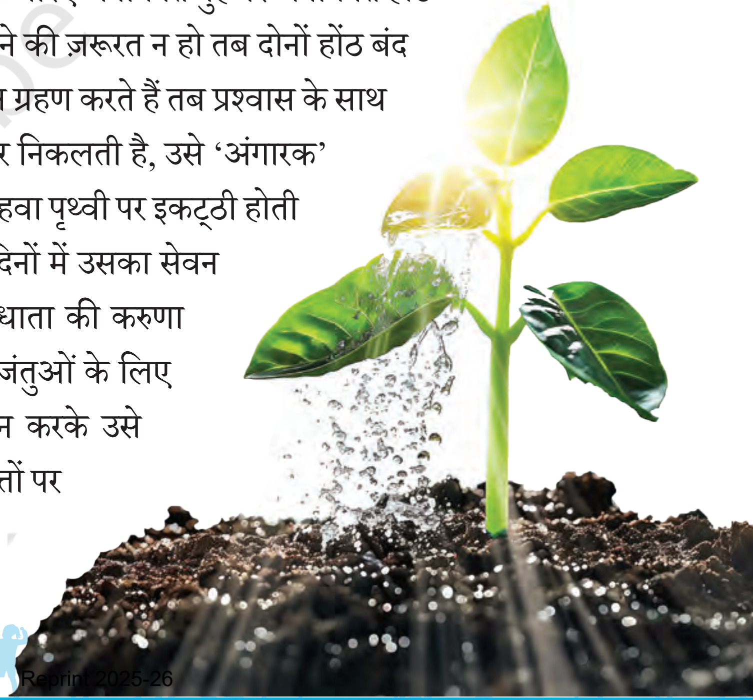

© NCERT not to be republished
Reprint 2025-26

जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है, तब पत्ते सूर्य-ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार निःशेष कर डालते हैं। और यही अंगार वृक्ष के शरीर में प्रवेश करके उसका संवर्द्धन करते हैं। पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। प्रकाश न मिलने पर ये बच नहीं सकते। पेड़-पौधों की सर्वाधिक कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए। यदि खिड़की के पास गमले में पौधा रखो, तब देखोगे कि सारी पत्तियाँ व डालियाँ अंधकार से बचकर प्रकाश की ओर बढ़ रही हैं। वन-अरण्य में जाने पर पता लगेगा कि तमाम पेड़-पौधे इस होड़ में सचेष्ट हैं कि कौन जल्दी से सिर उठाकर पहले प्रकाश को झपट ले। बेल-लताएँ छाया में पड़ी रहने से, प्रकाश के अभाव में मर जाएँगी। इसलिए वे पेड़ों से लिपटती हुई, निरंतर ऊपर की ओर अग्रसर होती रहती हैं।

अब तो समझ गए होंगे कि प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है। सूर्य-किरण का स्पर्श पाकर ही पेड़ पल्लवित होता है। पेड़-पौधों के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं। ईंधन को जलाने पर जो प्रकाश व ताप बाहर प्रकट होता है, वह सूर्य की ही ऊर्जा है। पेड़-पौधे व समस्त हरियाली प्रकाश हथियाने के जाल हैं। पशु-डाँगर, पेड़-पौधे या हरियाली खाकर अपने प्राणों का निर्वाह करते हैं। पेड़-पौधों में जो सूर्य का प्रकाश समाहित है वह इसी तरह जंतुओं के शरीर में प्रवेश करता है। अनाज व सब्ज़ी न खाने पर हम भी बच नहीं सकते हैं। सोचकर देखा जाए तो हम भी प्रकाश की खुराक पाने पर ही जीवित हैं।

कोई-कोई पेड़ एक वर्ष के बाद ही मर जाते हैं। सब पेड़ मरने से पहले संतान छोड़ जाने के लिए व्यग्र हैं। बीज ही उनकी संतान है। बीज की सुरक्षा व सार-सँभाल के लिए पेड़ फूल की पंखुड़ियों से घिरा एक छोटा-सा घर तैयार करता है। फूलों से आच्छादित होने पर पेड़ कितना सुंदर दिखलाई पड़ता है। जैसे फूल-फूल के बहाने वह स्वयं हँस रहा हो। फूल की तरह सुंदर चीज़ और क्या है? ज़रा सोचो तो, पेड़-पौधे तो मटमैली माटी से आहार व विषाक्त वायु से अंगारक ग्रहण करते हैं, फिर इस अपरूप उपादान से किस तरह ऐसे सुंदर फूल खिलते हैं। तुमने कथा तो सुनी होगी— स्पर्शमणि की अर्थात पारस पत्थर की, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। मेरे विचार से माँ की ममता ही वह मणि है। संतान पर स्नेह न्योछावर होते ही फूल खिलखिला उठते हैं। ममता का स्पर्श पाते ही मानो माटी व अंगार के फूल बन जाते हैं।

Reprint 2025-26

पेड़ों पर मुस्कराते फूल देखकर हमें कितनी खुशी होती है! शायद पेड़ भी कम प्रफुल्लित नहीं होते! खुशी के मौके पर हम अपने परिजनों को निमंत्रित करते हैं। उसी प्रकार फूलों की बहार छाने पर पेड़-पौधे भी अपने बंधु-बांधवों को बुलाते हैं। स्नेहसिक्त वाणी में पुकार सकते हैं, "कहाँ हो मेरे बंधु, मेरे बांधव, आज मेरे घर आओ। यदि रास्ता भटक जाओ, कहीं घर पहचान नहीं सको, इसलिए रंग-बिरंगे फूलों के निशान लगा रखे हैं। ये रंगीन पंखुड़ियाँ दूर से देख सकोगे।" मधुमक्खी व तितली के साथ वृक्ष की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती हैं। कुछ पतंगे दिन के समय पक्षियों के डर से बाहर नहीं निकल सकते। पक्षी उन्हें देखते ही खा जाते हैं, इसलिए रात का अँधेरा घिरने तक वे छिपे रहते हैं। शाम होते ही उन्हें बुलाने की खातिर फूल चारों तरफ़ सुगंध-ही-सुगंध फैला देते हैं।

वृक्ष अपने फूलों में शहद का संचय करके रखते हैं। मधु-मक्खी व तितली बड़े चाव से मधुपान करती हैं। मधु-मक्खी के आगमन से वृक्ष का भी उपकार होता है।

तुम लोगों ने फूल में पराग-कण देखे होंगे। मधुमक्खियाँ एक फूल के पराग-कण दूसरे फूल पर ले जाती हैं। पराग-कण के बिना बीज पक नहीं सकता।

इस प्रकार फूल में बीज फलता है। अपने शरीर का रस पिलाकर वृक्ष बीजों का पोषण करता है। अब अपनी ज़िंदगी के लिए उसे मोह-माया का लोभ नहीं है। तिल-तिल कर संतान की खातिर सब-कुछ लुटा देता है। जो शरीर कुछ दिन पहले हरा-भरा था, अब वह बिल्कुल सूख गया है। अपने ही शरीर का भार उठाने की शक्ति क्षीण हो चली है। पहले हवा बयार करती हुई आगे बढ़ जाती थी। पत्ते हवा के संग क्रीड़ा करते थे।

Reprint 2025-26

छोटी-छोटी डालियाँ ताल-ताल पर नाच उठती थीं। अब सूखा पेड़ हवा का आघात सहन नहीं कर सकता। हवा का बस एक थपेड़ा लगते ही वह थर-थर काँपने लगता है। एक-एक करके सभी डालियाँ टूट पड़ती हैं। अंत में एक दिन अकस्मात पेड़ जड़ सहित भूमि पर गिर पड़ता है।

इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके वृक्ष समाप्त हो जाता है।

लेखक— *जगदीशचंद्र बसु*

अनुवादक— *शंकर सेन*

लेखक से परिचय

(1858–1937)

प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु का बचपन प्रकृति का अवलोकन करते हुए बीता। पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं से प्रेम करते हुए उनकी शिक्षा आरंभ हुई। वे जीवविज्ञान, भौतिकी, वनस्पति विज्ञान तथा विज्ञान कथा लेखन में रूचि रखने वाले एक बहुविद् व्यक्ति थे। उन्होंने सिद्ध किया कि पौधों का एक निश्चित जीवनचक्र व एक प्रजनन प्रणाली होती है और वे अपने परिवेश के प्रति जागरूक होते हैं। इस प्रकार वे यह स्थापित करने वाले विश्व के पहले व्यक्ति थे कि पौधे किसी भी अन्य जीव रूप के समान होते हैं। विज्ञान जैसे विषय को भी चित्रात्मक साहित्यिक स्वरूप प्रदान करने वाले जगदीशचंद्र बसु ने सर्वप्रथम रेडियो तरंगों के द्वारा संचार स्थापित कर एक बड़ी वैज्ञानिक खोज की थी। 'पेड़ की बात' का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद शंकर सेन ने किया है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) "जैसे पौधे को भी सब भेद मालूम हो गया हो" पौधे को कौन-सा भेद पता लग गया?

- उसे उल्टा लटकाया गया है।
- उसे किसी ने सजा दी है।
- बच्चे को गमला रखना नहीं आया।
- प्रकाश ऊपर से आ रहा है।

(2) पेड़-पौधे जीव-जंतुओं के मित्र कैसे हैं?

- हमारे जैसे ही साँस लेते हैं।
- हमारे जैसे ही भोजन ग्रहण करते हैं।
- हवा को शुद्ध करके सहायता करते हैं।
- धरती पर हमारे साथ ही जन्मे हैं।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(क) "पेड़-पौधों के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं। ईंधन को जलाने पर जो प्रकाश व ताप बाहर प्रकट होता है, वह सूर्य की ही ऊर्जा है।"

(ख) "मधुमक्खी व तितली के साथ वृक्ष की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती हैं।"

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ वाक्यांश नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

	वाक्यांश		अर्थ या संदर्भ
1.	बीज का ढक्कन दरक गया	1.	मटमैली माटी और विषाक्त वायु से सुंदर-सुंदर फूलों में परिवर्तित होते हैं।
2.	उसे 'अंगारक' वायु कहते हैं	2.	जीवन के लिए सूर्य का प्रकाश आधारशक्ति या महत्वपूर्ण है।
3.	पत्ते सूर्य ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार निःशेष कर डालते हैं	3.	अपनी संपन्नता और भावी पीढ़ी की उत्पत्ति से प्रसन्न-संतुष्ट।
4.	प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है	4.	साँस छोड़ने पर निकलने वाली वायु-कार्बन डाईआक्साइड।
5.	जैसे फूल-फूल के बहाने वह स्वयं हँस रहा हो	5.	सूर्य के प्रकाश से पत्ते विषाक्त वायु के प्रभाव को नष्ट कर देते हैं।
6.	इस अपरूप उपादान से किस तरह ऐसे सुंदर फूल खिलते हैं	6.	बीज के दोनों दलों में दरार आ गई या फट गए।

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) बीज के अंकुरित होने में किस-किस का सहयोग मिलता है?

(ख) पौधे अपना भोजन कैसे प्राप्त करते हैं?

© NCERT not to be republished

लेख की रचना

इस लेख में एक के बाद एक विचार को लेखक ने सुसंगत रूप से प्रस्तुत किया है। गमले को औंधा लटकाना या मूली काटकर बोना जैसे उदाहरण देकर बात कहना इस लेख का एक तरीका है। अपने तथ्य को वास्तविकता या व्यावहारिकता से जोड़ना भी इस लेख की विशेषता है।

(क) जैसे लेखक ने 'पेड़ की बात' कही है वैसे ही अपने आस-पास की चीज़ें देखिए और किसी एक चीज़ पर लेख लिखिए, जैसे—गेहूँ की बात।

(ख) उसे कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए।

(क) "इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके वृक्ष समाप्त हो जाता है।" वृक्ष के समाप्त होने के बाद क्या होता है?

(ख) पेड़-पौधों के बारे में लेखक की रुचि कैसे जागृत हुई होगी?

प्रवाह चार्ट

बीज से बीज तक की यात्रा का आरेख पूरा कीजिए—

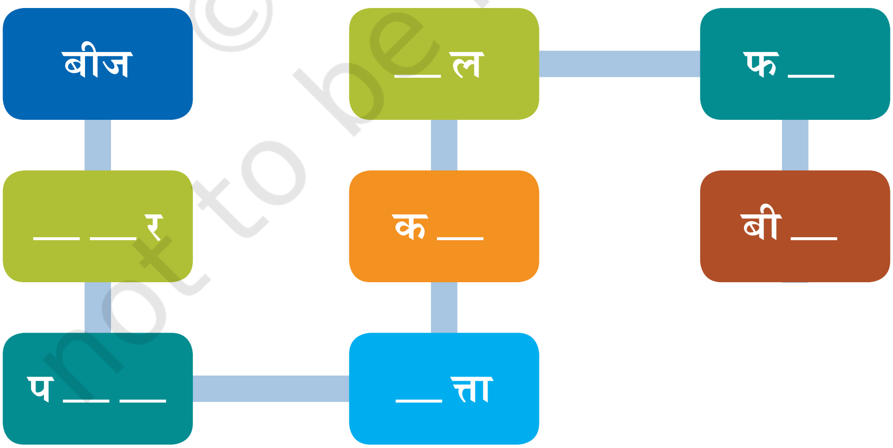

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

अंकुरण

- मिट्टी के किसी भी पात्र में मिट्टी भरकर उसमें राजमा या चने के 4–5 बीज बो दीजिए।
- हल्का-सा पानी छिड़क दीजिए।
- 3–4 दिन तक थोड़ा-थोड़ा पानी डालिए।
- अब इसमें आए परिवर्तन लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(संकेत— एक दिन में पौधे की लंबाई कितनी बढ़ती है, कितने पत्ते निकले, प्रकाश की तरफ़ पौधे मुड़े या नहीं आदि।)

शब्दों के रूप

नीचे दिए गए चित्र को देखिए।

यहाँ मिट्टी से जुड़े, कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं जो उसकी विशेषता बता रहे हैं। अब आप पेड़, सर्दी, सूर्य जैसे शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द बॉक्स बनाकर लिखिए—

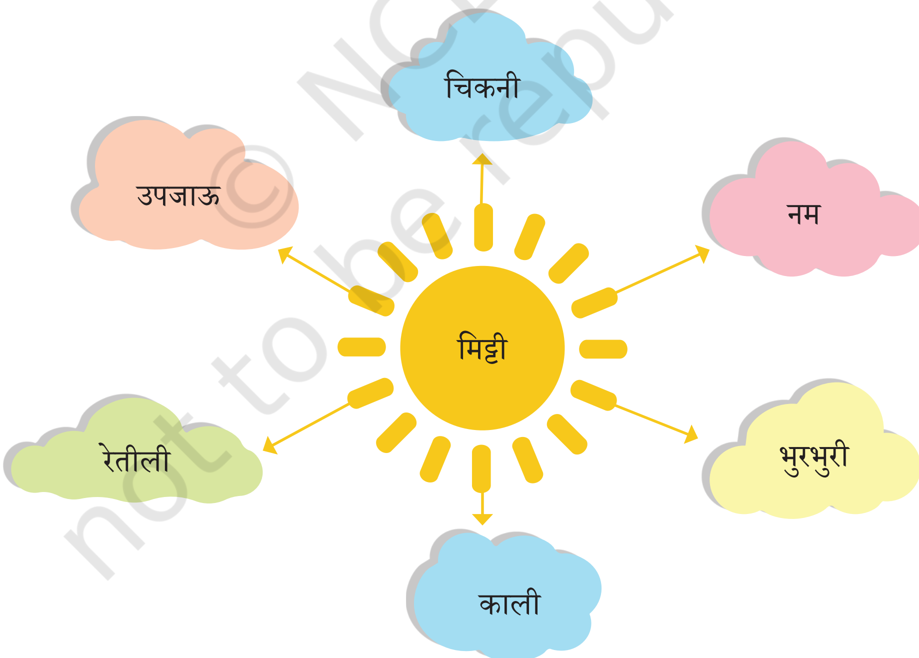

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

पाठ से आगे

मेरे प्रिय

नीचे दी गई तालिका से प्रत्येक के लिए अपनी पसंद के तीन-तीन नाम लिखिए—

फूल	पक्षी	वृक्ष	पुस्तक	खेल

आज की पहेली

इस शब्द सीढ़ी में पाठ में आए शब्द हैं। उन्हें पूरा कीजिए और पाठ में रेखांकित कीजिए—

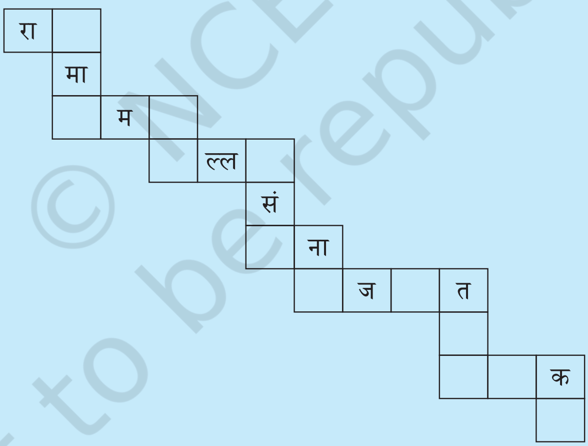

खोजबीन के लिए

इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग करके आप जगदीशचंद्र बसु के बारे में और जान-समझ सकते हैं—

- जगदीशचंद्र बसु
- जगदीशचंद्र बसु— एक विलक्षण और संवेदनशील वैज्ञानिक

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

पढ़ने के लिए

आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की

आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
जमुना जी के तट को देखो गंगा का ये घाट है
बाट-बाट में हाट-हाट में यहाँ निराला ठाठ है
देखो, ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
ये है अपना राजपूताना नाज इसे तलवारों पे
इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है आज़ादी के नारों पे
कूद पड़ी थी यहाँ हज़ारों पद्मिनियाँ अंगारों पे
बोल रही है कण-कण से कुर्बानी राजस्थान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

© NCERT not to be republished

देखो, मुल्क मराठों का ये यहाँ शिवाजी डोला था
मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पर्वत पे आग जली थी हर पत्थर एक शोला था
बोली हर-हर महादेव की बच्चा-बच्चा बोला था
शेर शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
जलियाँवाला बाग ये देखो, यहीं चली थी गोलियाँ
ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ़ बंदूकें दन-दन एक तरफ़ थी टोलियाँ
मरनेवाले बोल रहे थे इंकलाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाज़ी अपनी जान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है
यहाँ का बच्चा-बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है
ढाला है इसको बिजली ने भूचालों ने पाला है
मुट्ठी में तूफ़ान बँधा है और प्राण में ज्वाला है
जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

— कवि प्रदीप

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

शब्दकोश

यहाँ आपके लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान स्वयं लगाएँ कि कौन-सा अर्थ पाठ के लिए अधिक उपयुक्त है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक समानार्थी भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। इन संकेतों से हमें शब्दों की भाषा और व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—

अं.– अंग्रेज़ी	अ.– अव्यय	(अ.)– अरबी	अ.क्रि.– अकर्मक क्रिया
पु.– पुलिंग	फा.– फारसी	वि.– विशेषण	सं.– संस्कृत
स.क्रि.– सकर्मक क्रिया	सर्व.– सर्वनाम	स्त्री.– स्त्रीलिंग	

शब्दार्थ

अ

अंकुर [पु.सं.]– कली, नोंक, रोआँ, जल, रुधिर, विकास आदि के सूचक चिह्न

अंगारक [पु.सं.]– कार्बन, छोटा, अंगारा

अकस्मात[अ.सं.]– अचानक, संयोगवश, सहसा, बिना कारण

अचंभित [वि.]– चकित, विस्मित

अधर [वि.सं.]– होंठ, नीचा, अंतरिक्ष, पाताल

अधीर [वि.सं.]– धैर्यरहित, उतावला, आकुल, दृढ़तारहित

अनगिनत [वि.]– बेहिसाब, अगणित

अनुमति [स्त्री.सं.]– कोई काम करने, जाने-आने आदि के लिए किसी से ली गई स्वीकृति

अपरूप [वि.सं.]– कुरूप, भद्दा, अपूर्व

अप्रेंटिस [पु.अं.]– काम सीखने के लिए काम करने वाला व्यक्ति

अभिलाषा [स्त्री.सं.]– इच्छा, चाह, लोभ

अमराई [स्त्री.]– आम का बाग, उद्यान

अमावस [स्त्री.]– कृष्ण पक्ष की अंतिम रात्रि, अमावस्या

© NCERT not to be republished

अरि-मस्तक [पु.सं.]– शत्रु का माथा
अर्पण [पु.सं]– देना, दान करना, भेंट करना, वापस करना
असबाब [पु.(अ.)]– आवश्यक सामग्री, चीज़, वस्तु, मुसाफिर के साथ का सामान
असुर [पु.सं.]– दैत्य, दानव, खल, बादल
अस्तबल [पु.(अ.)]– अश्वशाला, तबेला

आ

आगमन [पु.सं.]– लौटना, आना, प्राप्ति, उत्पत्ति
आघात [पु.सं.]– चोट, प्रहार, धक्का, घाव
आच्छादित [वि.सं.]– ढका हुआ, छिपा हुआ
आत्मबल [पु.]– आत्मा का बल, मन का बल
आबद्ध [वि.सं.]– बँधा हुआ, बाधित, जकड़ा हुआ, निर्मित
आहिस्ता [अ.फा.]– धीरे-से, धीमी आवाज़ से

उ

उदारता [स्त्री.सं.]– दानशीलता, उदार स्वभाव
उपादान [पु.सं.]– ग्रहण, स्वीकार, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बने, प्रयोग

क

कंटोप [पु.]– वह टोपी जिससे कान ढके रहें
कपाल [पु.सं.]– खोपड़ी, मस्तक, घड़े का टुकड़ा, ढक्कन
करवाल [पु.सं.]– तलवार, खड्ग, नाखून
कलंकित [वि.सं.]– कलंकयुक्त, मोरचा लगा हुआ
कसौटी [स्त्री.]– परख, जाँच, एक काला पत्थर जिस पर सोना घिसकर परखा जाता है
क्रीडा [स्त्री.सं.]– खेल-कूद, किलोल, हास्य-विनोद

क्ष

क्षीण [पु.सं.]– दुर्बल, दुबला-पतला, क्षतिग्रस्त, घटा हुआ

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

ख

खरहरा [पु.]– कंघी करना, लोहे की कई दंतपंक्तियों वाली चौकोर कंघी जिससे घोड़े के बदन की गर्द साफ़ की जाती है

घ

घटा [स्त्री.सं.]– जल भरे बादलों का समूह, मेघमाला

घहर [अ.क्रि.]– पसरना, गरजना, गर्जन

घृणा [स्त्री.सं.]– नफरत, घिन

च

चित्त [पु.सं.]– मन, अंत:करण की चिंतना

चिरायु [वि.सं.]– दीर्घायु, बहुत दिन जीने वाला, चिरजीवी

चोगा [पु.फा.]– लंबा, ढीला-ढाला अँगरखा जिसका आगे का भाग खुला होता है, गाउन

छ

छटा [स्त्री.सं.]– शोभा, छवि, झलक, बिजली

छद्म [पु.सं.]– छल-कपट, बदला हुआ भेष

छहर [स्त्री.]– बिखरना, बिखरने की क्रिया

छीको [पु.]– रस्सी, तार आदि से बनी झोली जैसी चीज़ जिसे छत आदि से लटकाकर उस पर खाने-पीने की चीज़ें रखते हैं, सिकहर, छीका

ज

जन्मदात्री [स्त्री.]– माता, माँ, जननी

जलज [वि.]– कमल, जल में उत्पन्न

जलधर [पु.सं.]– बादल, मेघ

जौहरी [पु.(अ.)]– जवाहरात का रोज़गार करने वाला, रत्न-व्यवसायी, पारखी

त

तरुणाई [स्त्री.]– युवावस्था, जवानी

तरुवर [पु.सं.]– वृक्ष, पेड़

© NCERT not to be republished
Reprint 2025-26

ताड़ [पु.]– एक लंबा वृक्ष जिसमें शाखाएँ नहीं होतीं सिर्फ़ सिरे पर पत्तियाँ होती हैं
तिमिर [पु.सं.]– अंधकार, आँख का एक रोग, अँधेरा
तुच्छातितुच्छ [वि.सं.]– एकदम गया-गुजरा, अत्यंत निकृष्ट
तुर्रा [पु.(अ.)]– टोपी आदि में लगी हुई कलगी, अनोखा

द

दरक [स्त्री.]– दरकने की क्रिया, दरार, चीर
दीवान [पु.फा.]– प्रधानमंत्री, राजा या बादशाह की बैठक या थाने का मुंशी जिसके ज़िम्मे लिखापढ़ी का काम होता है
दूब [स्त्री]– एक प्रकार की घास, दूर्वा
देववाणी [स्त्री.]– देवताओं की वाणी, आकाशवाणी
द्रव्य [पु.सं.]– तरल पदार्थ, किसी पदार्थ का तरल रूपांतर

ध

धरा [स्त्री.सं.]– पृथ्वी, धरती
धावा [पु.]– किसी को जीतने, लूटने आदि के लिए बहुत से लोगों का एक साथ दौड़ पड़ना, हमला
धृष्टतापूर्ण[स्त्री.सं.]– ढिठाई के साथ, उद्दंडतायुक्त, निर्दयता के साथ

न

नद [पु.सं.]– बड़ी नदी, सरिता
नाईं [अ.]– तरह, भाँति
निदान [पु.सं.]– अंत में, आखिर, आदि कारण, रोग का कारण, रोग का निर्णय
निरापद [वि.सं.]– निर्विघ्न, सुरक्षित, आपत्ति से रहित
निर्भीक [वि.सं.]– जो किसी से भय न खाए, निडर, निरापद
निषंग [पु.सं.]– तरकश, तूणीर, तलवार
नेकनामी [स्त्री.फा.]– सुख्याति, सुप्रसिद्धि, सुकीर्ति
नौसिखिया [वि.]– अनुभवहीन, जिसने हाल में ही सीखा हो
न्योछावर [स्त्री.]– समपर्ण करना, त्यागना

© NCERT not to be republished
Reprint 2025-26

प

पठायो [स.क्रि.]– भेजना
पतियायो [स.क्रि.]– विश्वास करना, बात मानना
पराग-कण [पु.सं.]– फूल के भीतर की धूल, पुष्परज
पात्र [पु.सं.]– किरदार, अभिनेता, बरतन
पावस [पु.]– वर्षाऋतु, मानसून, समुद्र की ओर से आनेवाली वर्षा-सूचक हवा
पुतली [स्त्री.]– आँख के बीच का काला भाग जिसके मध्य में रूप ग्रहण करने वाली इंद्रिय होती है
पुनीत [वि.सं.]– पवित्र किया हुआ, शुद्ध
पुलकी [वि.सं.]– रोमांचयुक्त, आनंदित
पेचीदा [वि.फा.]– कठिन, उलझन वाला
पैठना [अ.क्रि.]– गहरे में जाना, प्रवेश करना
प्रफुल्लित [वि.]– खिला हुआ, अति प्रसन्न, प्रमुदित
प्राणवत्ता [स्त्री.सं.]– प्राणवान, जीवित होने के भाव

ब

बज्र-मय [वि.सं.]– कठोर, उग्र, भीषण
बड़ेन [पु.वि.]– उच्च, सामर्थ्यशाली
बदतर [वि.फा.]– अधिक बुरा, ज्यादा खराब
बरबस [अ.]– अकारण, बलपूर्वक, व्यर्थ
बहियन [स्त्री.]– बाँह, भुजा, बाजू
बहुतायत [स्त्री.]– अधिकता, बढ़ती, विशेषता
बांधव [पु.सं.]– निकट-संबंधी, भाई-बंधु, स्वजन
बाग [स्त्री.]– लगाम, रस्सी
बावरी [स्त्री.]– चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों, जलाशय, बावली
बिहँसि [अ.क्रि.]– मंद-मंद मुस्कुराना, खिलना

भ

भटक्यो [अ.क्रि.]– भटकना, इधर-उधर फिरना
भ्रांति [स्त्री.सं.]– भ्रम, संदेह, चक्कर, अस्थिरता

© NCERT not to be republished
Reprint 2025-26

म

मंदाग्नि [स्त्री.सं.]– पाचन शक्ति का दुर्बल हो जाना, हाजमे का बिगड़ जाना
मद [स्त्री.(अ.)]– खाता, लेखा, उन्माद, अहंकार
मधुबन (मधुवन) [पु.]– फूलों का बगीचा, बाग
मुद्राएँ [स्त्री.सं.]– मुख,हाथ, गर्दन आदि की कोई विशेष भावसूचक स्थिति, मुख चेष्टा, नाम की मोहरें
मुल्क [पु.(अ.)]– देश, राज्य, प्रदेश
मोहना [स.क्रि.]– लुभाना, छलना

र

रईस [पु.(अ.)]– उच्च वर्ग का आदमी, धनी, अमीर, शिष्ट
रकबा [पु.]– क्षेत्रफल, घिरी हुई ज़मीन, घेरा, अहाता
रण [पु.सं.]– युद्ध, संग्राम, लड़ाई, गति
रियासत [स्त्री.(अ.)]– राज, शासन, अमीरी
रेजीमेंट [स्त्री. अं.]– सेना का एक स्थायी विभाग, कर्नल के अधीन और कई टुकड़ियों में विभक्त
रोपना [स.क्रि.]– लगाना, जमाना, पौधा लगाना
रोमावलि [स्त्री.सं.]– रोमों की पंक्ति, रोयाँ

ल

लघु [वि.सं.]– छोटा, निर्बल, फुर्तीला, हल्का, कम
लट्टू होना [पु.]– मोहित होना, मुग्ध होना, हैरान होना
लौ [स्त्री.]– ज्वाला, दीपशिखा, चाह, आशा, कामना

व

वकालतनामा [पु.(अ.)]– किसी मुकदमें में वकील होने का प्रमाण-पत्र, वह लेख जिसके जरिए किसी वकील को किसी मुकदमें की पैरवी का अधिकार दिया जाए

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

वसुंधरा [स्त्री.सं.]– पृथ्वी, देश
वाद्ययंत्र [पु.सं.]– बाजा, बजाने का यंत्र
विकराल [वि.सं.]– भीषण, भयंकर
विगलित [वि.सं.]– पिघला हुआ, बहा हुआ, बिखरा हुआ, गिरा हुआ, सूखा हुआ, शिथिल
विज्ञापन [पु.सं.]– निवेदन, समाचार-पत्रों आदि में प्रचार
विषाक्त [वि.सं.]– विष मिश्रित
वीरगति [वि.सं.]– युद्धक्षेत्र में या युद्ध करते हुए मृत्यु
वैरी [वि.सं.]– शत्रु, शत्रुतापूर्ण, विरोधी, योद्धा
व्यग्र [वि.सं.]– व्याकुल, परेशान, घबराया हुआ, व्यस्त

श

शर्मिंदा [वि.फा.]– लज्जित, लजाया हुआ
शस्य-श्यामला [वि.सं.]– नई घास, फसल, अन्न, धान, श्रेष्ठ
श्राप [पु. सं.]– अमुक का बुरा हो ऐसी बुरी भावना व्यक्त करना, शाप, भर्त्सना
श्वास-प्रश्वास [पु.सं.]– साँस लेना और निकालना

स

संचय [पु.सं.]– एकत्र करना, जोड़, बड़ी राशि, ढेर, संधि
सचेष्ट [वि.सं.]– चेष्टाशील, चेष्टा करने वाला
सनद [स्त्री.(अ.)]– वह जिस पर पीठ टेकी जाए, प्रमाण-पत्र, अनुमति-पत्र
सवेरा [पु.]– प्रातःकाल, सुबह, सूर्योदय काल, सबेरा
समाँ [पु.]– समय, ऋतु, बहार
समृद्ध [वि.सं.]– संपन्न, सशक्त, धनी, उन्नतिशील
सरवर [पु.फा.]– सरोवर, ताल, तालाब, झील
सरित [स्त्री.सं.]– नदी, सरिता, धारावाहिक
साक्षात्कार [सं.पु.]– प्रत्यक्ष भेंट, मुलाकात, ज्ञान, अनुभूति
साधना [स्त्री.सं.]– अभ्यास करना, आराधना, उपासना, इकट्ठा करना
सिंधु [पु.सं.]– समुद्र, सागर, एक प्रसिद्ध नदी, दान
सिक्त [वि.सं.]– सींचा हुआ, भींगा हुआ, गीला

© NCERT not to be republished
Reprint 2025-26

सुयश [पु.सं.]– सुंदर यश, सुकीर्ति
सुरम्य [वि.सं.]– अति रमणीय, मनोहर
सूक्ष्म पदार्थ [वि.सं.]– बहुत बारीक तत्व, वस्तु
सूक्ष्मदर्शी [वि.सं.]– बहुत बारीक देखने वाला यंत्र, अणु रूप देखने वाला यंत्र
स्नेह [पु.सं.]– प्रेम, कोमलता, तेल, दयालुता

ह

हतप्रभ [वि.सं.]– जिसकी कांति क्षीण हो गई हो
हय-टाप [स्त्री.सं.]– घोड़े के पाँव के पृथ्वी पर पड़ने से उठी आवाज़

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

पहेलियों के उत्तर

पाठ संख्या			
1.	**मातृभूमि**	*शब्दजाल*	अलगोजा, बीन, बाँसुरी, सींगी, शहनाई, नादस्वरम, भंकोरा, शंख
		आज की पहेली	हिमालय, गंगा, भारत, कलियाँ, पवन
3.	**पहली बूँद**	*शब्द पहेली*	नगाड़ा, नयन, जलधर, दूब, अश्रु, अंबर
5.	**रहीम के दोहे**	*आज की पहेली*	चना, माचिस
6.	**मेरी माँ**	*आज की पहेली*	मंगलमयी, प्रत्येक, ग्यारह, धार्मिक, महान, स्वाधीन, दुखभरी, साधारण, छोटी, बड़ा, खूब, मनोहर
7.	**जलाते चलो**	*आज की पहेली*	पवन, मारुत, वायु, समीर, बयार, अनिल
8.	**सत्रिया और बिहू नृत्य**	*आज की पहेली*	मूली, नारियल, होंठ, चींटी
9.	**मैया मैं नहिं माखन खायो**	*आज की पहेली*	खोया, पनीर, मिठाई, छाछ, लस्सी, मक्खन, शरबत, आइसक्रीम
11.	**चेतक की वीरता**	*आज की पहेली*	जलज, पतंग, अंधेरा, गुलाबजामुन, मानचित्र
12.	**हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान**	*आज की पहेली*	मेरा भारत मेरा गौरव
13.	**पेड़ की बात**	*आज की पहेली*	रात, तमाम, ममता, ताप, पल्लव, वसंत, तना, नाम, मज़बूत, तरल, लटक, कम

© NCERT not to be republished

‘ब्रेल भारती’ हिंदी वर्ण व गिनती

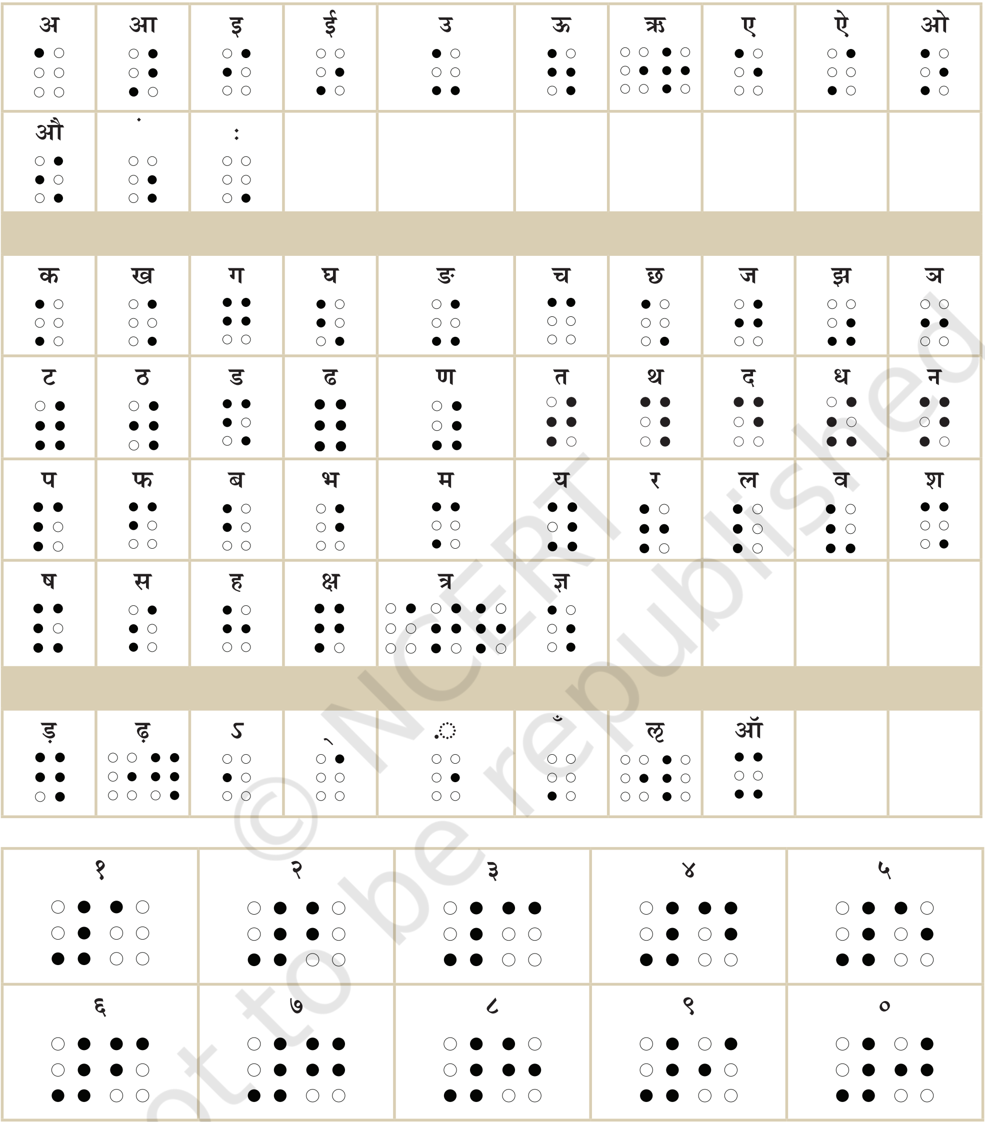

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished

टिप्पणी

© NCERT
not to be republished